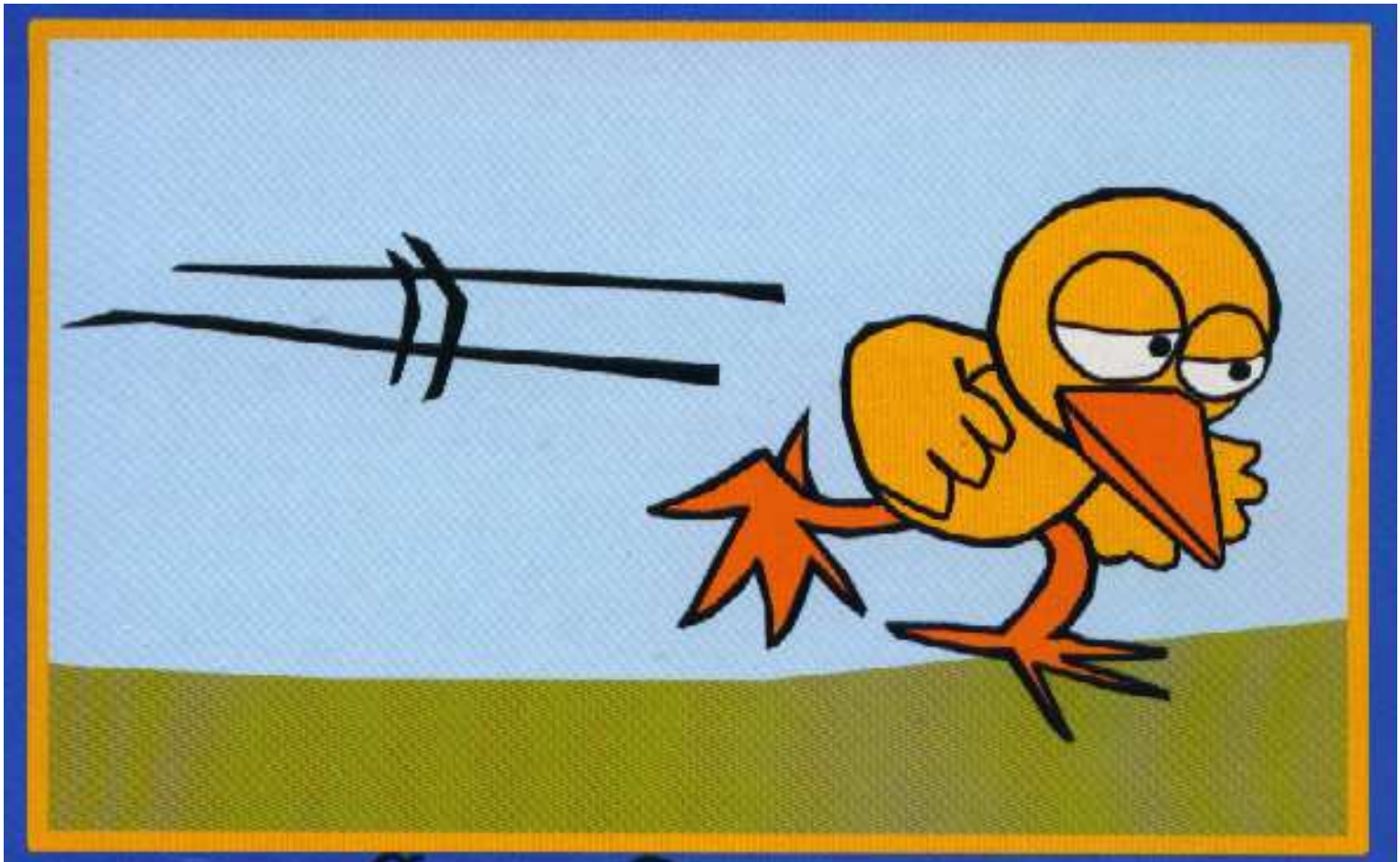

मुर्गी का निराला बच्चा

कथा ज़ाकिर हुसैन
चित्र पूजा पोट्टनकुलम

एक बड़ी सी मुर्गी ने एक बड़े से टोकरे में बहुत सी घास इकट्ठा की। और इस नर्म–नर्म प्याल पर बहुत से सफ़ेद अण्डे दिए। और बस दिन रात उन पर बैठना शुरू किया।

एक हफ़्ता गुज़रा, दो गुज़रे, तीन गुज़रे। कहीं इक्कीसवें दिन जा कर अण्डे खुट–खुट टूटना शुरू हुए। और हर अण्डे में से एक नन्हा मुन्ना बच्चा निकला। उनके छोटे–छोटे पर कितने नर्म थे और कैसे गर्म हर बच्चा रूई का गोला मालूम होता था।

माँ भी कितनी खुश हुई। लेकिन फिर भी उसे ज़रा सी फ़िक्र बाकी थी। एक अण्डा रह गया था जिसमें से अभी तक कुछ न निकला था।

बेचारी माँ उसको अपने परों से गर्मी पहुँचाती और अल्लाह मियाँ से दुआएँ माँगती कि उसमें से भी ऐसा ही प्यारा सा बच्चा निकले जैसे और अण्डों से निकले थे। पर इस अण्डे को कोई जल्दी न थी। चौबीसवें दिन सुबह तड़के अण्डे से किसी ने खुट–खुट करके अण्डे को तोड़ दिया।

अण्डा जो टूटा तो उसमें से एक प्यारा सा चूज़ा निकला। यह चूज़ा बड़ा निराला था।

सुनहरे, मुलायम पर, काले–काले मोती जैसी आँखें और तेज़ नुकीली चोंच। प्यार से माँ उसे चूजू मियाँ कहती थी और सब उसका इतना लाड़ करने लगे कि वह तो बिलकुल इतरा गए।

अपने को कुछ खास समझने लगे। फिर एक दिन, माँ के पास आकर बोले "अम्माँ, अब मैं इस टोकरी में नहीं रह सकता। मैं तो राजा के महल जाऊँगा।"

माँ बच्चों को दाना चुगना सिखा रही थी। "चूजू मियाँ, कैसी बातें करते हो। छोटे बच्चों को चाहिए कि चैन से घर पर माँ के परों में गर्म–गर्म रहे।"

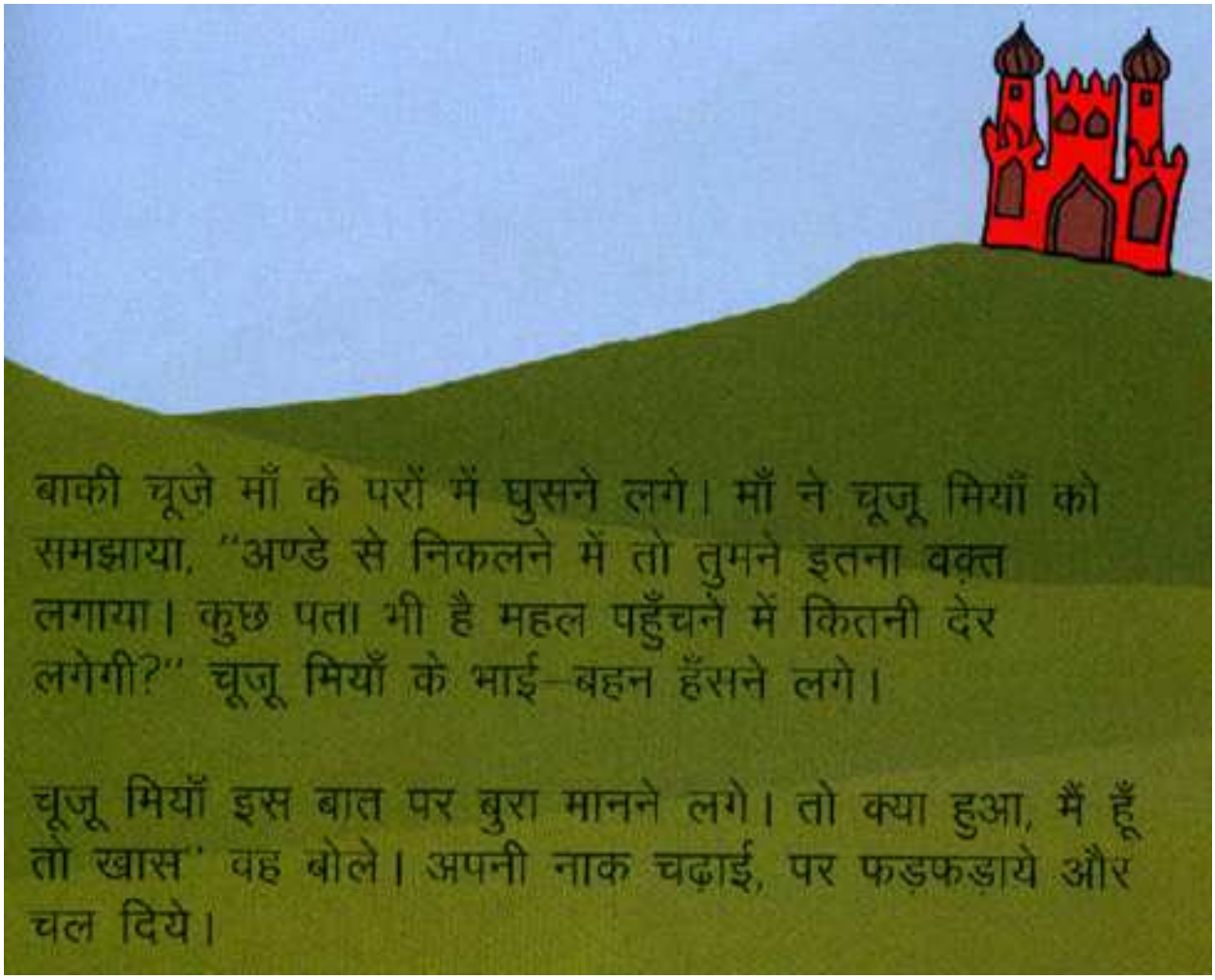

बाकी चूज़े माँ के परों में घुसने लगे। माँ ने चूजू मियाँ को समझाया, "अण्डे से निकलने में तो तुमने इतना वक़्त लगाया। कुछ पता भी है महल पहुँचने में कितनी देर लगेगी?" चूजू मियाँ के भाई–बहन हँसने लगे।

चूजू मियाँ इस बात पर बुरा मानने लगे। तो क्या हुआ, मैं हूँ तो खास' वह बोले। अपनी नाक चढ़ाई, पर फड़फड़ाये और चल दिये।

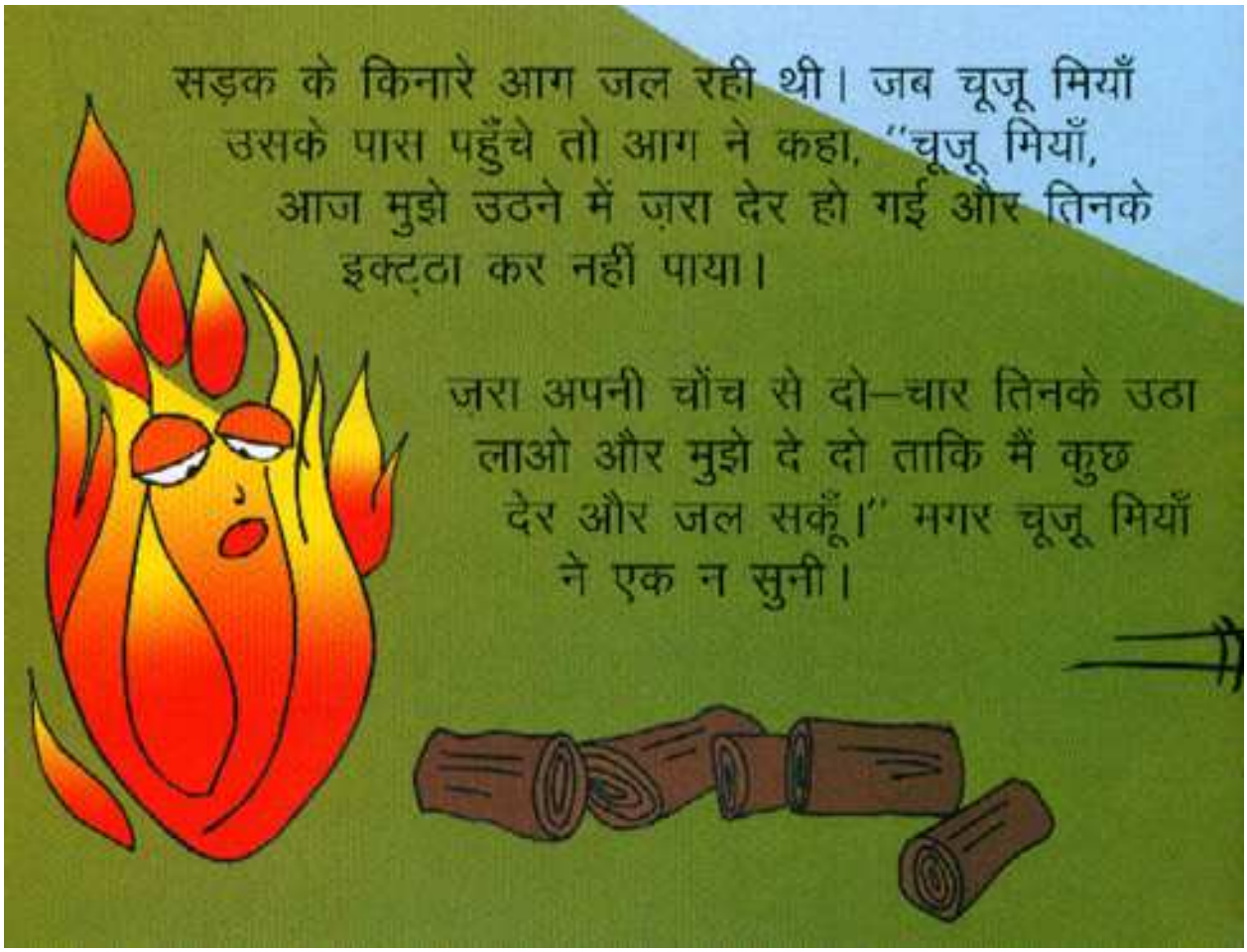

सड़क के किनारे आग जल रही थी। जब चूजू मियाँ उसके पास पहुँचे तो आग ने कहा, "चूजू मियाँ, आज मुझे उठने में ज़रा देर हो गई और तिनके इक्ट्ठा कर नहीं पाया।

ज़रा अपनी चोंच से दो–चार तिनके उठा लाओ और मुझे दे दो ताकि मैं कुछ देर और जल सकूँ।" मगर चूजू मियाँ ने एक न सुनी।

अपना सर झटक कर बोले "मैं जल्दी में हूँ। मुझे राजा के महल जाना है।" अपनी नाक चढ़ाई, पर फड़फड़ाए और चल दिए।

कुछ दूर चले तो एक छोटा सा चश्मा मिला जिसका पानी बड़ी मुश्किल से कंकर–पत्थर पर बह रहा था। पानी बोला, "चूजू मियाँ आज मुझे उठने में ज़रा देर हो गई और मैं अपना रास्ता साफ़ न कर पाया। ज़रा अपनी चोंच से दो–चार कंकर तो हटा दो ताकि मैं आसानी से बह सकूँ।" मगर चूजू मियाँ ने एक न सुनी।

अपना सर झटक कर बोले, "मैं जल्दी में हूँ, मुझे राजा के महल जाना है" अपनी नाक चढ़ाई, पर फड़फड़ाए और चल दिए।

और आगे बढ़े तो एक कँटीली झाड़ी दिखाई दी। बेचारी हवा का दामन इसके काँटों में फँस गया था। चूजू मियाँ को देखकर, हवा बोली, "आज मुझे उठने में देर हो गई और जल्दी में, मैंने इस झाड़ी के काँटे नहीं देखे और मैं इसमें फँस गई हूँ। अल्लाह के वास्ते मेरी मदद करो। अपनी चोंच से यह काँटे हटा दो।"

मगर चूजू मियाँ ने एक न सुनी। अपना सर झटक कर बोले, "मैं जल्दी में हूँ। मुझे राजा के महल जाना है।" अपनी नाक चढ़ाई, पर फड़फड़ाए और चल दिए।

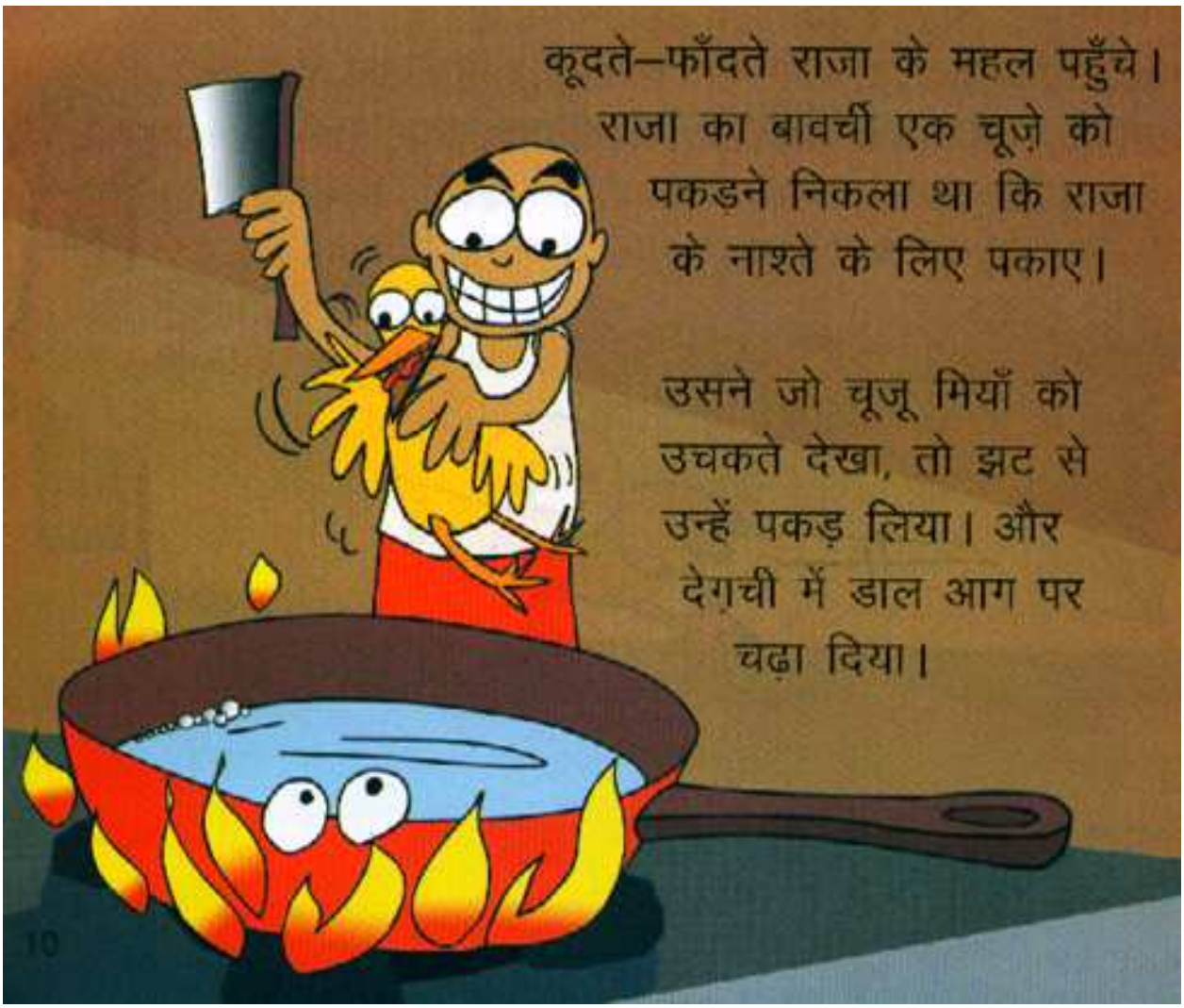

कूदते–फाँदते राजा के महल पहुँचे। राजा का बावर्ची एक चूज़े को पकड़ने निकला था कि राजा के नाश्ते के लिए पकाए।

उसने जो चूजू मियाँ को उचकते देखा, तो झट से उन्हें पकड़ लिया। और देगची में डाल आग पर चढ़ा दिया।

चूजू मियाँ ने चिल्लाना शुरू किया "दुहाई है, दुहाई है, बी आग, खुदा के वास्ते मुझे मत जलाओ।" अच्छा तो अब चूजू मियाँ को मेरी मदद चाहिए, बी आग ने सोचा।

लेकिन उसे तरस आ गया और एकदम अपने को बुझा दिया।

उधर से हवा गुज़र रही थी। चूजू मियाँ की दर्द भरी आवाज़ सुनकर वह रूक गई।

उसे तरस आ गया और एक तेज़ झोंके ने देगची को चूल्हे पर से गिरा दिया।

चूजू मियाँ घबरा कर देगची मे से निकले और जान बचा कर भागे। मगर देगची की आवाज़ सुन कर बावर्ची दौड़ा आया।

चूजू मियाँ कि तरफ़ लपका और चूजू मियाँ डर के मारे फिर चिल्लाने लगे, "अरे, कोई बचाओ।" उनकी आवाज़ जब पानी ने सुनी तो उसे तरस आ गया।

एक तेज़ बहाव में चूजू मियाँ को बचा के ले निकला और सीधे घर पहुँचा दिया।

टोकरी में बैठे माँ और चूजू मियाँ के भाई–बहन उन्हें देखकर खुशी से खिल उठे। चूजू मियाँ को भी घर लौट कर अच्छा लगा।

लेकिन अपने किए पर शर्मिन्दा थे। "मैंने तो आग, पानी और हवा की मदद नहीं करी थी मगर उन्होंने तो मुझे बचा लिया। अब मुझे उनका कर्ज़ उतारना होगा। मगर कैसे?"

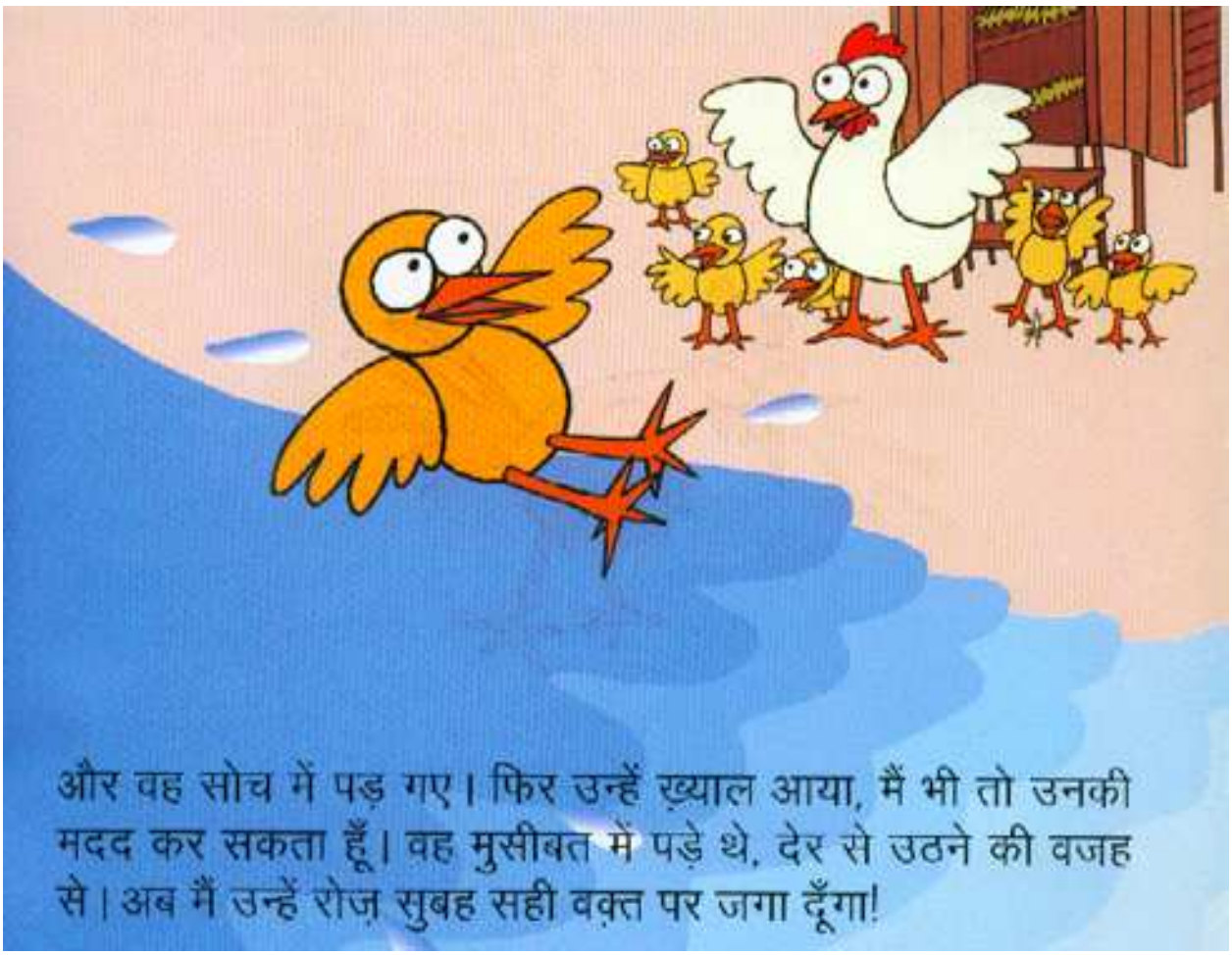

और वह सोच में पड़ गए। फिर उन्हें ख़्याल आया, मैं भी तो उनकी मदद कर सकता हूँ। वह मुसीबत में पड़े थे, देर से उठने की वजह से। अब मैं उन्हें रोज़ सुबह सही वक़्त पर जगा दूँगा!

और अगले दिन सुबह तड़के चूजू मियाँ उठे और करारी सी बाँग दी। आज तक वह बाँग देते हैं आग, पानी और हवा को जगाने के लिए।

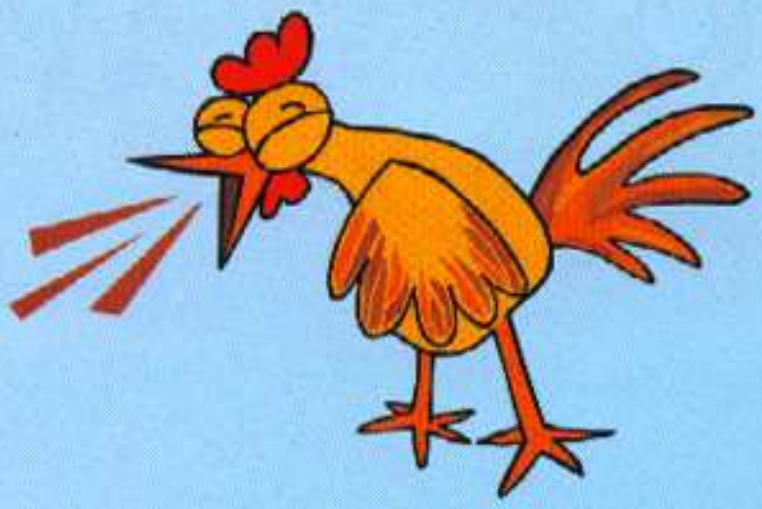

क्या तुम भी जग जाते हो?